ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

छायावादोत्तर संस्मरण साहित्य : भाषा–स्वरूप

Post-Memoir Literature: Language Format

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

अनिल कुमार गिरि
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
श्री डी0 पी0 वर्मा मेमोरियल डिग्री कालेज, सीतापुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भाषा विचारों के आदान –प्रदान का सशक्त माध्यम है। भाषा हमारे अर्थ को सहज संम्प्रेषित करती है। उसका स्वरूप सार्वजनिक होता है। लेकिन जहाँ गद्य भाषा का प्रश्न है वहॉ का व्यक्तित्व शब्दों के अर्थ में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ देता है। इसे साहित्यकार का निजत्व कहा जा सकता है। एक सशक्त लेखक भाषा के नए संस्कार और अर्थ देता है। किसी भी रचना में भाषा का महत्व सर्वाधिक होता है। संस्मरण में सब कुछ भाषा द्वारा ही अभिव्यक्त होता है। भाषा के बिना संस्मरण का कोई अस्तित्व नहीं, सच्चाई यह है कि जिस सरहद पर एक बौद्विक या विद्वान या सांसांरिक दिग्गज की भाषा समाप्त होती हैं, ठीक वहीं से रचनाकार की सृजनात्मक भाषा का प्रारम्भ है। समाज का व्यवहृत बिन्दु भाषा है वहीं सृजन का प्रस्थान बिन्दु है। जहाँ सबका अन्त होता है, रचना वही से अपना आरम्भ करती है। अगर सत्य का अस्तित्व वाणी में सम्भव है तो सबसे बड़े सत्य की सुन्दरतम अभिव्यक्ति भाषा में ही सम्भव है।

Language is a powerful medium for the exchange of ideas. Language communicates our meaning easily. Its form is public. But where there is a question of prose language, the personality of the person leaves his special mark in the meaning of words. This can be called the privacy of the writer. A strong writer gives new rites and meanings to the language. Language is of utmost importance in any composition. Everything is expressed by language in the memoir. Memoirs have no existence without language, the truth is that the border on which the language of a Buddhist or scholar or worldly legend ends, is exactly where the creative language of the creator begins. Language is the vantage point of society and there is a departure point of creation. Where everyone ends, creation starts from that. If the existence of truth is possible in speech, then the best expression of the greatest truth is possible only in language.

मुख्य शब्द : सम्प्रेषण, अभिव्यक्ति, सृजनात्मक, प्रस्थान, छायावादोत्तर,परिमार्जित, संवेदना, संस्मरणीय, निरूपण, हृदयस्पर्शी ।

Communication, Expression, Creative, Departure, Post-Cinematography, Refined, Sensation, Memorial, Formulation, Touching.

प्रस्तावना

संस्मरण गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। इसमें वर्णन की प्रधानता रहती है। जो स्मृति से सम्बन्धित रहता है। संस्मरण में संस्मरणकार सजीव पात्रों के बाह्य रूप के साथ–साथ आन्तरिक चरित्र एवं व्यक्तित्व का भी वर्णन करता है। संस्मरणकार जब अपनी स्मृतियों को संस्मरण का रूप देता है। तो वह मुख्यतः निजी जीवन के साथ– साथ संस्मर्ण्य व्यक्ति या घटना को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि वह घटना या पात्र संवेदनाओं के साथ उभर आता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन छायावादोत्तर संस्मरण साहित्य भाषा स्वरूप का अध्ययन किया गया है। इस शोध–पत्र का एक महत्वपूर्ण पहलू भाषा पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इसके साथ छायावादी संस्मरण साहित्य के भाषा स्वरूप को निरूपित करने का प्रयास इस शोध पत्र का उद्देश्य है। भाषा के विभिन्न प्रकार एवं उसकी प्रवृत्ति का वर्णन किया गया है।

छायावादोत्तर संस्मरणः भाषा स्वरूप

छायावादोत्तर संस्मरणों में संस्मरणकारों ने साधारण बोलचाल की भाषा को अपनाया है फिर भी उनके संस्मरणों में आम–बोलचाल की भाषा के शब्दों के

साथ उर्दू , फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। इस युग के संस्मरणकारों के संस्मरणों में सामान्य, व्यंग्यात्मक, आलंकारिक, भावानुकूल, परिमार्जित, ओजपूर्ण प्रसादगुण सम्पन्न भाषा के रूप देखनें को मिलते हैं। छायावादोततर संस्मरण साहित्य के भाषारूप को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

साधारण भाषा

बोलचाल की भाषा को साधारण भाषा या सामान्य भाषा कहा जाता है। 'जिन्दगी मुस्करायी' संस्मरणात्मक कृति में कन्हैया मिश्र 'प्रभाकर' जी ने सुन्दर एवं हृदयस्पर्शी बोलचाल भाषा का प्रयोग करते हुए लिखा है–

''मेरी खिड़की के सामने एक पेड़ खड़ा है। मेरी ही तरह साधारण देह है उसकी पर जब उस पर फूल आते हैं जैसे आकाश से बरसी देवताओं की हँसी का अम्बार हो। चारों ओर हल्के लाल रंग के फूल यहॉ तक कि पत्ते भी ढक से जाते हैं। मैं अपने पलंग पर बैठा उसे घण्टो देखता रहता हूँ पर मन नही भरता। मैने अक्सर सोचा है कि काली मिट्टी में जन्में कुरूप तने पर आश्रित इस पेड़ में ऐसे कोमल पत्ते इतने सुन्दर फूलों की सृष्टि विश्व का कितना बड़ा चमत्कार है। सोचते–सोचते ही कई बार मैं उठकर अपनी भावुकता के आवेश में उस पेड़ से जा लिपटता हूँ और मुझे ऐसा आनन्द आया है, मानो मैं अपने किसी मित्र से मिल रहा हूँ।''

इस प्रकार संस्मरणकार ने अपने स्मृति चित्र को सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करके मार्मिक रूप में स्पष्ट करता है ।

भावानुकूल भाषा

भावानुकूल भाषा का प्रयोग संस्मरणकार संस्मर्ण्य व्यक्ति के प्रति अपने मनोभावों को व्यक्त करते समय करता है। छायावादोत्तर संस्मरणकारों ने अपने संस्मरणों में भावानुकूल भाषा का सशक्त प्रयोग किया है। शान्तप्रिय द्विवेदी, विष्णु प्रभाकर आदि अनेक संस्मरणकारों ने अपने संस्मरणों में भावानुकूल भाषा का प्रयोग करते हुए अपने स्मृति सन्दर्भो को इस प्रकार चित्रित किया है–

''सहसा पं0 भवानीप्रसाद मिश्र का नाम स्मृति–पटल पर उभरते ही उनकी कविता 'गीतफरोश' की पंक्तियॉं कानों में गूँजने लगती हैं। 'जी हॉं जनाब मैं गीत बेचता हूँ। स्वयं कवि के मुख से उनकी यह कविता मैने बार–बार सुनी है और बार–बार यह अनुभव किया है। यह स्वयं द्वारा शब्दों में निर्मित उनका प्रोजेक्ट है अन्तर और बाह्य दोनो का उनके अन्तर की ब्यथा जैसे उनके बाह्य रूप में नाटकीय होकर रच–बस गयी थी।'' 2

इस प्रकार विष्णु प्रभाकर ने अपने संस्मर्ण्य भवानीप्रसाद मिश्र के प्रति अपने मनोंभावों को बडी सजीवता के साथ भावानुकूल भाषा में व्यक्त किया है।

परिमार्जित भाषा

संस्मरण को विश्वासनीय एवं तत्कालीन परिस्थितियों से उसे संपृक्त करने के लिए परिमार्जित भाषा का प्रयोग किया जाता है। संस्मरणकार अपने स्मृति–संदर्भों को और आत्मीय बनाने के लिए परिमार्जित भाषा का प्रयोग करता है। छायावादोत्तर संस्मरणकारों ने अपने संस्मरणों में परिमार्जित भाषा का सजीवता पूर्वक प्रयोग किया है।

''राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त को सारा हिन्दी–जगत दद्दा के नाम से जानता है। जिस प्रकार एक परिवार में 'दादा' या 'बाबा' की स्थिति होती है। उसी प्रकार हिन्दी की नई व पुरानी पीढी के प्रायः सभी साहित्यिक दद्दा के नाम से अभिहित किया करते थे। भारतीय परिवारों में बाबा या दादा की संज्ञा को जो सम्मान तथा गौरव प्राप्त हुआ है। वास्तव में दद्दा उनके मूर्ति–मंत्र प्रतीक थे। हिन्दी का ऐसा कदाचित ही कोई विरला साहित्यकार होगा जो उनके सरल एवं निश्छल व्यक्तित्व की गरिमा से लाभान्वित न हुआ हो।'' 3

इस प्रकार छायावादोत्तर संस्मरणकारों ने संस्मरण को विश्वसनीय एवं तत्कालीन परिस्थियों से उसे संप्रक्त करने के लिए परिमार्जित भाषा का प्रयोग किया है।

आलंकारिक भाषा

आलंकारिक भाषा का प्रयोग संस्मरण को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए किया जाता है। संस्मर्ण्य व्यक्ति, पात्र, घटना, को सजीव ढंग से प्रस्तुत करने के लिए छायावादोत्तर संस्मरणकारों ने अपने संस्मरण में इस प्रकार की भाषा का सर्वत्र प्रयोग किया है। 'आचार्य गौडीज' के स्वभाव को बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने इस प्रकार आलंकारिक भाषा में प्रस्तुत किया है–

''प्रो0 गौड़ीज का बातचीत का ढंग अद्भुत था। मेढ़क की तरह एक विषय से दूसरे विषय पर कूदना उनके लिए बड़ा आसान था, पर इससे उनके नेता लोग बडे चक्कर में पड जाते थे।'' 4

भाषा की आलंकारिकता स्मृति चित्रों को सजीवता प्रदान कर पाठक के लिए रोमांचक दृश्य का निर्माण करती है। इस युग के संस्मरणकारों ने अपने संस्मर्ण्य की अनुभूति का चित्रण अधिकांशतः इस प्रकार की भाषा शैली में किया है।

ओजपूर्ण भाषा

ओजपूर्ण भाषा का सम्बन्ध उन स्मृति संदर्भो से होता है। जहॉं पर संस्मरणकार परिवर्तन की दिशा एवं दशा की ओर इंगित करता है। 'राहुल सांकृत्यायन' 'अमृतलाल नागर' 'डॉ0 नगेन्द्र' आदि संस्मरणकारों ने अपने संस्मरणों को ओजपूर्ण भाषा में व्यक्त किया है।

''नौजवानों को काम चाहिये। काम देखने पर उनका जोश बढ़ता है वह और लगन से काम करने लगते हैं। यही बात हमारे एकमा के तरूण नेताओं के बारे में थी। मुझे थाने से बाहर जिलें में घूमते रहने की जरूरत पडी लेकिन मैने कभी एकमा को छोडकर ऐसा नही किया घूमने के लिए एक घोड़ा और इक्का ले लिया था। सत्याग्रह की तैयारी होने लगी सभायें करके लोग नाम लिखने लगे। सरकार ने स्वयं सेवक संगठन को गैर कानूनी घोषित कर दिया था। लेकिन कानून क्या करता, जब लाखों की तादात में लोग खुशी से जेल जाने के लिए तैयार थे और उनके रहने के लिए जगह नहीं थी इसीलिए कुछ चुने हुए लोगों को ही सरकार ने गिरफ्तार किया।'' 5

इस प्रकार कहा जा सकता है कि छायावादोत्तर संस्मरणों में ओज पूर्ण भाषा का प्रयोग स्मृति संदर्भो को व्यक्त करने के साथ समाज में एक नई चेतना जाग्रत करने के लिए की गई। इस प्रकार के स्मृति चित्र जनमानस को राष्ट्रसेवा के प्रति सजग एवं उनकी भागीदारी की प्रेरणा प्रदान करते है।

प्रसादगुण संम्पन्न भाषा

मानव जीवन के संदर्भो को बडी सजीवता सहजता से व्यक्त करने के लिए संस्मरणकार व्यक्तिगत अनुभूतियों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि संस्मर्ण्य व्यक्ति या घटना पाठकों के समक्ष बडी सजीवता से साकार हो जाती है और भाषा के गुण को व्यक्त करती है। यशपाल के विषय में अमृतलालनागर जी कहते है।

''अपनी बात पर अड़ जाने वाले जरूरतमन्दों के उदार बेलाग बात कहने वाले गम्भीर विचारक बच्चों की तरह सरल और मजदूर की तरह अपना काम करने वाले कलमकश यशपाल।'' 6

प्रसाद गुण सम्पन्न भाषा लेखक के स्मृति पक्ष का पाठको के हृदय का जिज्ञासु बना दत है। छायावादोत्तर संस्मरण लेखक अपनी कटु–मधुर स्मृतियों का चित्रण इस भाषा में करके सजीव बना दिया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भावानकूल परिमार्जित आलंकारिक प्रसादगुण सम्पन्न भाषा के कारण छायावादोत्तर युग संस्मरण हृदयस्पर्शी सजीव एवं उच्चकोटि की रचनायें बन गयी हैं। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', यशपाल, बल्लभ डोभाल के संस्मरण प्रसादगुण संम्पन्न है। तो बनारसीदास चतुर्वेदी, अमृतलाल नागर, शिवानी, ममता कालिया जी के संस्मरण भावानुकूल प्रयोग के लिए तथा हरिवंशराय बच्चन, रामवृक्ष बेनीपुरी, अचला नागर, कृष्णा सोबती, ज्ञान रंजन, मनोहर श्याम जोशी, उपेन्द्रनाथ अश्क के संस्मरण आलंकारिक भाषा का रूप ग्रहण किये हुये है। संस्मरण साहित्य की वह विधा है। जिसमें मन की संवेदनाओं भावों को ग्रहण करने की क्षमता होती है। संस्मरण में चित्रित स्मृति संदर्भ हमारे भावों विचारों को अधिक प्रभावित करते है। वे बाह्य स्थितियों की अपेक्षा मन की आन्तरिक स्थिति को अधिक प्रभावित करते है। राहुल सांकृत्यायन, रामवृक्ष बेनीपुरी के संस्मरणों में जोश है,। दूसरों के प्रति तड़प है, तो वहीं बनारसीदास, चतुर्वेदी अमृतलाल नागर आदि के संस्मरणों में जीवन जीने की जिजीविषा निहित है। तो बच्चन जी के संस्मरणों की भाषा कविता रूपी रस से परिपूर्ण है। डॉ0 नगेंन्द्र, रामविलास शर्मा के संस्मरणों का मूल स्वर व्यक्ति के मर्म को उजागर करना है। छायावादोत्तर संस्मरणकारों ने अपने संस्मरणों में अलग–अलग भाषा रूपों का प्रयोग किया है। विशिष्ट भाषा में रचित रचना और अधिक प्रभावी, सजीव एवं आकर्षक बन जाती है। एक कुशल लेखक अपनी रचना को सुसंगठित , आत्मीयतापूर्ण और संक्षिप्तता के गुणों को भाषा के माध्यम से सज–सँवारकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। इन्ही गुणों के कारण रचना स्मरणीय बन जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जिन्दगी मुस्करायी पृ0सं027 कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली 2007*
2. *यादों की छाव में पृ0सं040 विष्णुप्रभाकर, सुनील साहित्य सदन नई दिल्ली 2002*
3. *मेरे प्रिय मेरे आराध्य पृ0स0 26 क्षेमचन्द्र ममता प्रकाशन दिल्ली 2001*
4. *संस्मरण पृ0सं0 62 बनारसी दास चतुर्वेदी , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली 1959*
5. *मेरे असहयोग के साथी पृ0सं0 25 राहुल सांकृत्यायन, किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद 2005*
6. *जिनके साथ जिया पृ0स073 अमृतलाल नागर , राजपाल एण्ड संन्स नई दिल्ली 1991*